श्रीः ।

हनुमत्पताका ।

श्रीयुत पं० कालीदत्तरचित ।

जिसमें
अञ्जनीनन्दन हनुमान्‌जीका लङ्कागमन
सीतामिलन इत्यादि कथा रोचक
पद्योंमें वर्णित है ।

जिसे
खेमराज श्रीकृष्णदासने
निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें
छापकर प्रकट किया ।

मुंबई.

वैशाख संवत् १९५१

श्रीः ।

हनुमत्पताका ।

श्रीयुतपं॰ कालीदत्तरचित ।

जिसमें

अञ्जनीनन्दन हनुमान्‌जीका लङ्कागमन
सीतामिलन इत्यादि कथा रोचक
पद्योंमें वर्णित है

जिसे

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें
छापकर प्रकट किया

वैशाख संवत् १९५१

श्रीः ।

अथ

हनुमत्पताका ।



दोहा ।

वंदि चरण रघुनंदके, वह कपिंदकुलवीर ॥ बलसागर पहुँच्यो तुरत, जल सागरके तीर ॥

कवित्व ।

उच्चकर अच्छन ततच्छन विलोको वीर पाय कलकच्छन सुगंध मधु मल्लीको॥काली कवि तडित उतालतन तीरन पर ताक तमतमको तमाल तरु तल्लीको॥पिच्छल पछेल पगझेल वन

वल्लभ ने वल्लभ नदीको कियो एकही उछली को ॥ तुच्छकर कुच्छन भुजान बल स्वच्छकर गुच्छकर शिरपै स-मच्छ पुच्छ बल्लीको ॥ २ ॥

दोहा ।

असुर मार सुरसाहि छल, दार लं-किनीदार ॥ लखत भयो कपिलंकको, नभचुंबित पुर द्वार ॥ ३ ॥

कवित्व ।

चित चकचौंधौ परे रतन दिरौंधौ देख कौंधौ जोत जालको रहोधौं चंदल ससो ॥ काली कबि झुलत बयार लग-वार वार वारिद सवारिके उवार अतल ससो॥इन्द्रधनु सुंदर परंदमणि तोरणते परत प्रमोद मुद मंगल हुलससो ॥ शर-

पुर द्वारके बलंद दर मंदिर पर दिपत दिनेश वेश कुंदन कलससो ॥ ४ ॥

दोहा।

चलो पैठ शंका न कछु,रंकारत रघुधी-र॥लंकासे गढ़ दुर्गमें, बंका वारनवीर५॥

कवित्त।

भमर विडारतसे नचत तुरंग जहँ मारगमतंग मद जलन छिकौ भयो ॥ काली कवि नगर पताक पटछाहन ते दरशि दिनेशकौं न तन तानिकौभयो॥ डारत झरोखनते अतर फुहारवारि परत कपिंदपर पवन फिकौ भयो ॥ वल्लरी न रोकत न झोकत पलक नेक नागरीन-के मुख विलोकत विको भयो ॥ ६ ॥

दोहा ।

नचत शंभु शिरमणि गिरो, दिनमणि गयो हिराय ॥ तमनताहि खोजन चली, भूतभीर भहराय ॥ ७ ॥

कवित्व ।

एकै पिय लाड़लीँ तिलाईं तस्तरीनवीच लाईं पानवीरीँ सजासिजिलमसाला में ॥ काली कवि सबज सुरंग सुखसेजन पर आब छिरकावतीं गुलाब गुलगाला में ॥ एकै सजगज कल गावतीँ कचोरन में एकैं रहीं हालाभर सुघर पियाला में ॥ एकैं नवनाला गुहैं किंकिणी रसालागु हैं एकैं फूलमाला गुहैं बाला चित्रशालामें ८॥

दोहा ।

एकैं पिय तिय पगन में, जावक रहे

लगाय ॥ एकैं मृगनैनीनकी, वेणी गुहत बनाय ॥ ९ ॥

कवित्व ।

एकैं पुर सुंदरी पुरंदरीन लावैं लाज दृगन दिखाय वनमृगन मृगावतीँ॥काली कवि कंजदल अमल कपोलनको खोल गुल गोलनके अलिन टिमावतीं ॥ एकै कुचकोरनपै वारवंद छोरन तै घन घन ओरनते मोरन निगावतीं ॥ तनक उघारकै सुबन्दकरलेतीँ मुख चंदरस खोरन चकोरन चिंगावतीँ ॥ १० ॥

दोहा ।

तब लग नभ अरविंदसों, उदित भयो छबिछंद । सुंदर चंदन विंदुसो सुधाकंद सो चंद ॥ ११ ॥

कवित्व ।

कोकनद वृंदनको मंदन महान मद कुमुद मलिंदनको करन मुदै भयो ॥ कालीकवि गगन वितानवर फुंदन सुलुंद नवनीतको पयोदधि जुदै भयो ॥ कोकगन कृंदन निकंदन सुमान कंद पंदित सुधाको वुंद निंदन खुदै भयो ॥ वंदन हुजानको चकोर चित चंदन अनंदन महीको सिंधुनंदन उदै भयो ॥ १२ ॥

दोहा ।

नीलकसीं भ्रमरीनके, कुमुदिनि किये शृँगार ॥ चपल चंचुकर चंदरस, चखहिँ चकोरीं चार ॥ १३ ॥

कवित्व ।

खोलकर वदन गदूल गुल गोलनके

कमल अमोलनके दलन दलाकरैं ॥ कालीक विचाक दिलचकवन चोरनके चखन चकोरनके अमृत झलाकरैं ॥ याम यामिनी में काम योगिन जगावैं देत बलि सौ वियोगिनको भोगिन भलाकरैं ॥ छहर छरीलीं छूट क्षितिके छलापै आज किरणै कलाकरकी कोरन कला करैं ॥ १४ ॥

दोहा।

धवल सिंधु लहरीनमें, फेन भये उतरात ॥ निजमणीनजल विंदुसे, इन्दु किरण ह्वैजात ॥ १५ ॥

कवित्व।

हेलिन पर हिलक हवेलिन पर वेलिन पर नगर नवेलिन पर नज़र नटागई ॥

कालो कवि उमग सटासी क्षीरसागर-
की अमल अटान छाय शरद घटागई॥
पागन पर पीवके सुहागिल सुहागन पर
बागन पर वगर परागन पटागई ॥ अंब-
रते छुटक छपाक क्षितिमंडल पर छप-
क छपाकरकी छहर छटागई ॥ १६ ॥

दोहा ।

आल बाल शशिते चली, पाय सुधा
जलमेल ॥ गई भुवन किरियानपर, छ-
छल चाँदिनी वेल ॥ १७ ॥

कवित्व ।

गगन सरोवरको हँसत सरोज ऐसो
ओजकर लसत मनोज रथ चाकसो ॥
कालीकवि अमृत अनूप बल्लरीको फल
सुरग तरंगिनी तटीको चक्रवाकसो ॥

कंदुक अमोलहै चकोर चित्त नंदन
को दिपत बलंद रतिमंदिर चिराक-
सो ॥ रूप गुण सुंदरी पुरंदरी दि-
शाको यह उदित अमंद इन्दु सुंदर बु
लाकसो ॥ १८ ॥

दोहा।

सोहत परे कलंकके, शशि महँ श्या-
मलविंदु ॥ शेष कुंडली पै मनो, सोवत
परे गुविंद ॥ १९ ॥

कवित्त।

छोरतपकंचुक चकोर कुच कोरन
को करन पसारके उघार तम सारीको॥
काली कवि अमर तरंगिनी इजारी खो-
ल जारी कर हसन गदूल गुलजारीको॥
चांदनीको चंदन चढ़ाइ सब अंगनमें

तारनके हारन सम्हार सुकुमारीको ॥ दावकर अंबर अंशक परयंक पर अंक भर भेटत मयंक निशि नारीको ॥२० ॥

दोहा ।

थकित करीर तरंगमें, युवति यामिनी इन्दु ॥ झलकरहे तारा मनहुँ ॥ श्रम जल शीतल विन्दु ॥ २१ ॥ याविधि चंद्रोदय निरख, हरष वीर बलधाम ॥ धाम धाम खोजन लगो, राम बाम अभिराम ॥ २२ ॥

कवित्व ।

झलक रहीं हैं झुक झालरैं हिरागनकीं चहक चिरागनकीं चिलक भरीं रहीं॥कालीकवि तनित वितान जरतारिनकीं पदर किनारिनकीं लहक लरींरहीं ॥

देतकर अहह मृदंग तुकतालनपै मदमतवालिनकीं फरक फरीं रहीँ ॥ दमक दरीनके सुवीच वीजुरीँसीँ कहूँ कनक छरीँसीं छूट छमक परीँ रहीं ॥ २३ ॥
छापकर छपन चलाँक चितचोरनको कुँवर किशोरनकों भुजन भरै लगीं ॥ कालीकवि शरद मयंक मुख मोर मोर सोर सिसकारिनके सरस करैं लगीं॥ उसक उसासनसों कसक कराह आह मसक मसोसनसों कसम सरै लगीं ॥ लहक लपेट कट चुंबन चहक चाह महँक सुगंधन सौं गहक गरैं लगीं ॥ २४ ॥
वृंद मुखचंद्रपै परे हैं इन्द्र नीलनके छकित छबीलिनके छहर छरे परे ॥ कालीकवि गिलिम गुलाब गुलगहिनपै

सबज सराबी जामढकनढरे परे ॥ मद्यमद गलित पलंग तट पाटिनते देखे कहूँ गोरिनके लटक गरे परे ॥ घाँघरे हरेके भरे मुकुत मुकेसन ते कमर तरेलौं खरे निपक नरे परे ॥ २५ ॥

सवैया ।

भाल महावर लीक लसैं विलसैं अधरान में अंजनछौंहै ॥ त्यों कविकाली किये अँखियानके नींद झलान पला झपकौंहै ॥ सोहैं न हेरत सौहैं करैं कहूँ किंकिणीसे बँधे कंत सिसौंहै ॥ मानभरीं गजरान उनै रहीं कामिनी तान कमानसीं भौंहै ॥ २६ ॥

दोहा ।

या विधि पुर कौतुक लखत, देत

सबन तन पीठ ॥ पहुँची पवनकिशो-
रकी, राज पौंर पर दीठ ॥ २७ ॥

कवित्व ।

दुग्ध सरोवरकी लहर छटासी छूट फिरत अटापै शशि शरद उदौ करैं ॥ काली कबि छकत चकोर मुख सौंहैं होत कुमुद हसौंहैं होत कमल मुदौ करैं ॥ प्रथम चकौंपैजकौ देत मुदरीकौं हतौ विरह व्यथाकी कपि खबर खुदौ करैं ॥ लंक पटरानी यह परख गयौहै जिहि जनकसुतातैं मुख हरष जुदौ करैं ॥ २८ ॥

दोहा ।

तिलते डरपत केशहैं, केशन ते

मुखभीर ॥ मुखते कुच देखे दुखित सुखित भयो कपिवीर ॥ २९ ॥

कवित्व ।

शरद सरोजमुख कुमुद विकाश हास दशन विलास कुंदकलिन समी सचौ ॥ कालीकवि चारु चंपहावरनी के रहौ चिबुक चमेलीपर फिरत नचौ नचौ ॥ अधर अमंद बंधु जीव गुल आ-बन पै गुलफ गुलाबन पर कतनरली रचौ॥असुर धनाके तन सुमन घनामैं पै-ठपवनतनयको मन भ्रमर भले बचौ ३०

दोहा ।

फिरत विलोकत जानिकिहि, गये तहाँ हनुमान ॥ जहाँ सुरतहारीं करहिं पुरनारी असनान ॥ ३१ ॥

कवित्व ।

देखसर नाभिको सरोवर अतुल्य और तुल्य त्रिवलीनहूके सुरन सिढ़ीनहैं ॥ कालीकवि कायल मृड़ाल भुज नालनतैं लोचन विशालनतैं घायल सुमीनहैं ॥ वारनतैं सकुच सिवारन गई हैं पैठ हारनतैं तुमुल तरंग तरलीनहैं ॥ क्षीण छबि मधुप महीन मधु बोलनतैं अमल कपोलनतैं कमल मलीनहैं ॥ ३२ ॥

दोहा ।

उदसावत कुबलय विपिन, अरु सरोज संघात ॥ हेला कुच रेलानके, वेला लौं बढ़ जात ॥ ३३ ॥ प्रियपतनी लंकेशकी, जिहि निकेत नित जाय ॥ पूजत

शशिधर शंभुको ॥ सनख उरोज दु-
राय ॥ ३४ ॥ तिहि मंदिर आईं सकल
मज्जन कर ततकाल ॥ लगीं सम्हा-
रन दीपकन, हेमसीपकन बाल ॥ ३५ ॥

कवित्व ।

चारु चहुँओरन ते चन्द्रधर मंदिर
में चटुल चकोरनको मचत चुहौं चुहौं ॥
कालीकवि बुंदकन चन्द्रमणि हारन-
को अतरफुहारनको परत फुहौं फुहौं ॥
झूम झुक आरत उतारतहीं ओजनते म-
दन उरोजनतैं परत दुहौं दुहौं ॥ कृशित
कलंक फंक वदन मयंकिनके लरमल-
फंक लंक लफत लुहौं लुहौं ॥ ३६ ॥

दोहा ।

स्वसन धूप दीपक हसन, सुधा नि-

वेदन वैन ॥ कर कंजन नख अक्षतन पूजे पुजे त्रिनैन ॥ ३७ ॥ तिहि अवसर आयो तहाँ, मुनि पुलस्त्यकुलदीप ॥ दीपमालिकासी लगी, मंदोदरी समीप॥३८॥ निज शिरीष पंकजनतैं, जिनहिं पूज लंकेश ॥ कीन्हे अरि वनितानके कुसुम विहीने केश ॥ ३९ ॥ तिन शिवको पूजन कियो, सहित विभव विस्तार ॥ लगो बहुरि स्तुति करन, छंद प्रबंध प्रचार ॥ ४० ॥

रावण उवाच ।

विनिद्रसत्तरंगिणी तरंग भंग संगमप्रकम्पमानकुन्तलावलीविलोलपन्नगे॥ नगाधिराजनन्दिनीमुखेन्दुकौमुदीक्षणप्रफु-

ह्रुदक्षिकैरवे शिवे निवेशितं मनः ॥ ४१ ॥
परस्परम्पुरन्दरप्रभृत्यदेवमण्डलीकुरं-
गशावकेक्षणार्चीरत्रचित्रितांगणे॥ललाट
चन्द्रचंद्रिकासुधावधौतमन्दिरे दृगग्नि-
भग्नमन्मथेनिमग्न मस्तु मे मनः ॥ ४२ ॥
स्वभक्तवैरयोषितां करप्रतालताडनैःप-
लाण्डुपक्वपाटलीकृताशुगण्डमण्डलः ।
सुरेन्द्रभालचन्दनप्रलिप्तपादपंकजः प्र-
भुर्जगद्वशंकरश्शुभं करोतु शंकरः ४३॥
दिने पियस्य मन्दिरे दिनेशरास्मिरञ्जि
ताः पिबन्ति चन्द्रिकारसश्चिरञ्चकोर
पंक्तयः॥ जटा घटापि यस्यसंनदन्मयूर
तोरणा तनोतु मंगलम्मुदै नसांसमेहरो

हरः ॥ ४४ ॥ उमाकपोलदर्पणप्रवेश
दर्शितामलं स्वकीयकण्ठकालतामालि-
भ्रमेण वारयन्॥प्रिया प्रहासदन्तकच्छ
टावकाश चन्द्रिका चकोरशावकीकृतं
पुनातु नो हसन् हरः ॥ ४५ ॥ हलिप्रिया
रसालसाकुलावलालिकावली विशाल
वालमालतीप्रसूनजालमालिका ॥ पराग
पुञ्जमञ्जुलेनरञ्जितांघ्रिपङ्कजं समस्त
दोषदोषणम्भुजङ्गभूषणं भजे ॥४६॥ न-
खाङ्कितेनमञ्जुरञ्जितेन चन्दनाम्भसावि
भूतिपिण्डपाण्डुरेण मण्डितेन सद्रुचा ॥
जटासितानेनेन स्वेदितेन सुन्दरी प्रिया
पयोधरेण ह्न पितः पुनातु चन्द्रशेखरः ॥
॥ ४७ ॥ सदाशिवाय शङ्कराय शाश्वता-

य शूलिने भवाय भैरवाय भूतभावनाय भास्वते ॥ विभावरीशखण्डभूषिताय कृत्तिवाससे मृड़ाय माधवप्रियाय मुक्तिदाय ते नमः ॥ ४८ ॥

दोहा ।

भवहि वन्दि मन्दिर गयो, रावण सहित समाज ॥ लगो लखन रनिवासको प्रति अवास कपिराज ॥ ४९ ॥

कवित्त ।

भूल भरकीसी सरकीसी केश पासन ते छिदवर कीसी नैन नोकन नुकाहकी॥ कालीकवि रांनिनके रपटी कपोलन पै खाई कुच गोलनपै चोट चट काहकी॥ विध विच कीसी तीन त्रिबली तरा-

लन में डूबत बचीसी नाभि भमर भमाहकी॥आहकर उडकी कराहकैं विभीषणके तिलक तिराह पै निगाह कपिनाहकी ॥५०॥

सवैया।

आनँदके उँमगे अँशुवा पुलके सब अंग परैं पिघलेसे॥त्यों कविकाली मिटार मनौ मर्याद सनेह समुद्र पिलेसे॥मोद भरे हुलसे हियरे युग ओरते लोचन कंज खिलेसे॥ कीशै इतै मिली जानकीसी उतै लागे विभीषणै राम मिलेसे ॥५१॥

दोहा।

कुशल प्रश्नकर भीषणहि, पूंछी हरि शिरमौर ॥ रघुकुलकी जीवनलता, जनकसुता किहि ठौर ॥ ५२ ॥

दोहा

संपाति लोचन लोककी, जाय विलोकहु आप॥ तरु अशोकतर बसतहैं, भरी शोक संताप॥ ५३॥

दोहा।

तिहि अशोकतरु कुंजमहँ, कपि आयो ततकाल॥ जहँ रसालकी मौरपर, भीरें भौंर उताल॥ ५४॥

कवित्व।

गहब गुलाब गल चटक चमेलिनके बेलनके विदल दुमेलन दलापरैं॥ काली कवि सघन रसालद्रुम कुंजनमें कोकिला कलापनके हहलहलापरैं॥ प्रसरत मंजु मृदु मारुत मलयमंद सरस सुगंधनकी सकल कला परैं॥ मोद मद मंथर मलिंद-

मतवारिनके मधु मकरंदन पै झपक झ-
लापरैं॥५५॥लरम लफीले लफलौलहे ल-
वोदन की लतन लदाऊ लौद लदलतरी
फिरै ॥ काली कवि कुंज प्रति कोकिला
किशोरिनके कलह कुलाहलते कलन क-
री फिरै॥ सुरभि सुगंधित पिशंगित परा-
ग रज पवन तरंग वन भवन भरी फिरै॥
गौरन पै गहब गुलाब गुल झौरन पै लद
वद भौंरनकी पदर परी फिरै॥ ५६ ॥

दोहा।

फिरत बाग देखत लखी, जनक
सुता अतिदीन॥ परीभूमितल विकलज-
नु, कमला कमल विहीन॥५७॥

कवित्त ।

भौंर भर भंजित अशोक तरु पुंज कुंज वंजुलकी मंजरी सुमंजु कुमला परी॥का-ली कवि तोरतरु मरुत मरोर जोर घोर घनमंडलते चूक चपलापरी ॥ विनही अरामके अराममें दशाननके तामरस दाम छाम रामअबलापरी ॥ दौजद्विज-राजकी अकाशते सु आज मानों राहु भय भाज छूट क्षितिपै कलापरी ॥ ५८ ॥

दोहा ।

आनन अरुण प्रवालतन, वरण सुर-ण सम तूल ॥ परण पुंज कपि छपरह्यौ, जनु अशोकको फूल ॥ ५९ ॥

दोहा।

सुंदर दरशन योग तब, दशकंधर धर रूप॥ आयो हर हर करत सिय, थर थर कँपी अनूप॥ ६०॥

रावण–कवित्व।

डारकर अतर सुगंध सुखसाजनके गंध गजराजनके गौहरन गूनेहैं॥ काली कवि मागनपै देव नर नागनके बागनके पुहुप परागनतें पूनेहैं॥ नील मन नवल तमालघन मालनतें व्यालन तें वाल मधु पालिनतें दूनेहैं॥ परम सुदेश केश कामिनी हमारिनके चूड़ामणि चरण तिहारे बिन सूनेहैं॥ ६१॥

दोहा।

कत कीजत कुचसों हियौ, पाय हस-

न सी रैन ॥ हितकटिसौ नखसे वचन अधरन ऐसे नैन ॥ ६२ ॥ आनन में राखौ न विधि,अधर खुलन कौ नेत॥बो-ली यह संदेह जनु,दूरकरन के हेत॥६३॥

जानकी-कवित्व ।

हीन तन अधिक अलीन आसुरीन कौसुतिमिर मलीन घनकेशनको वेश-है॥ काली कवि चूड़ामणि चरण हमारे योग रावण तिहारी यह भणति भदेश-है ॥ नखसों तिहारे मूढ़ कविन वखानो मोहिं यह अपराध क्षमिबेको करनेश है॥ चरण सरोजनको निरख धराकी ओर रुकत न रोको नित झुकत दिने-शहै॥६४॥

दोहा।

रघुपति हित आतपाविना, हिय न-
वनीत द्रवैन॥ रामचन्द्र बिन होय क्यों
हसन चाँदनी रैन ॥ ६५॥

रावण—दोहा।

वेर कहा राखी सुकर, दृगभ्रमरनकी
वेर॥ देत क्योंन नीरजनयानि, एक वेर
हँसहेर॥ ६६॥

जानकी—दोहा।

देखी रावण नृपनकी, मतमतवारी
होत॥ सुनै कहूँ वारिज विमल, विकसत
जुगनू जोत॥ ६७॥

रावण—कवित्त।

मंदकर कुमुद कदंव सुरवृंदनको मु-
नि मुख चन्दनको करन कलेशको। का-

ली कवि असुर अमंद अरविंदनको मुद मकरंदनको हरष हमेशको॥ उदित उदंड भुजवरन मयूखनते भार तम टारनहै शिखरमहेशको ॥ देखौ देश देशन दिशान दीपदीपनमें दमक रहोहै तेज रावण दिनेशको ॥ ६८ ॥

दोहा ।

वरषत मो घनभुजनतें, असिधारा को नीर ॥ राजहंस सो जाय उड़, तेरो श्वास समीर ॥ ६९ ॥ मास दिवस वध अवधकर, सरमहि संग लिवाय ॥ दशकंधर मंदिर गयो, सीयगई सिसियाय ॥ ७० ॥ कनक कुंभ योवन युगल, नैननके जलवोर ॥ चन्द्रमुखी

बोली दुखित, निरख चन्दकी ओर॥७१॥

कवित्व ।

पूरबको भागहै सुहाग गजभामिनीको यामिनीको राग अनुराग कुमुदीनको ॥ सागरको पूत दूत काम नटनागरको तिलक उजागरहै गिरिश प्रवीनको॥का-लीकवि काम कामिनीकी किंकिणीको नग चिंतामणि चोकस चकोर तरुणीन को ॥ सारहै सुधाको वसुधाको सरदार दार पूनौको शृंगार है अंगार विरही नको ॥ ७२ ॥

दोहा ।

तम विरोध कछु सुखामिलो, हर सुत

हँसे अघाय ॥ हमहिं मार द्विज राजकी, धर्मध्वजा फहराय ॥ ७३ ॥
यदपि विरहमसि मलिन मुख, निशिपति तदपि न भूल ॥ लाख लटे मुक्तातऊँ, घटे न शुकता तूल ॥ ७४ ॥
गगन सरोवर सुभग महँ, तबलग परे लखाय ॥ विकसे कुमुद कदंबसे, तारनके समुदाय ॥ ७५ ॥

कवित्व ।

मंद मंद दीपत अमंद नभ कानन में मलय फनिंदनके फेन फुनगारेहैं ॥ कालीकवि रैन नें वियोग पिय वासरके नैननते अश्रुजल विंदुउनगारेहैं ॥ मार-

कर नखन विदार शशिकेहरने हाड वि-
रहीनके हजार नवगारेहैं ॥ डारेहैं
मारतंड किरन किनारे रहे छूट नभ
तारेहैं कि बरत अँगारेहैं ॥ ७६ ॥

दोहा ।

डारदई अवसर निरख, मणि मुँदरी
हनुमान ॥ लई मगनमन जानकी, गगन
अगिनकण जान ॥ ७७ ॥

कवित्व ।

आवत उरोज ऐसो बाढ़त वियोग
दुख मनकी भईहै गति लोचन चमरसी॥
कालीकवि भौंहसों विलोकिकै विसासी
विधि जीवनकी आश अब लागत कम-
रसी ॥ उरसों अवासकेश तमसों तमाम

जग देखे विन रामश्याम मूरति समरसी ॥ वैसही थकीती पार पावती न तापै भई विरह समुद्रबीच मुंदरी भवँरसी७८

दोहा ।

परम पियारी रामकी, मणि मुंदरी किहि तौर ॥ हर आई यह लंकमें, जनकसुतासी और ॥ ७९ ॥ ॥

हनुमान–कवित्त ।

कंजकरकोमलकीं मुंदरी न मातु यह भानुकुल भूषणको भूषण भुजानभो ॥ कालीकवि विरह तिहारे अब रावरेको मलय समीर तीर हूतें खरसानभो ॥ को हौ तुम? हौं तौ दूत पीतम तिहारेको देख लघुरूप तव संशय निदानभो ॥ लंकपुर

कंदर समुंदर मथनकाज बंदर बलंद मेरु मंदर समान भो ॥ ८० ॥

जानकी-दोहा।

चिरजीवहु रघुनाथ प्रिय, भेंट तुमहिं यह देत ॥ वनफलही भोजन यहाँ अतिथि तिहारे हेत ॥ ८१ ॥

कवित्व।

शलभ परंदसौ प्रियाल द्रुम वृंदन कौ मंद पिचु मंदन अमंद असिधारसौ॥ कालीकवि तड़ित समान तरु तालनकौ तरुण तमालनकौ तुमुल तुसारसौ ॥ पवनकुमार भौ दिमारसौ न मेरुनकौं केरनकौं वेरनकौं विकट वयारसौ ॥ कठिन कुठारसौ कदंब कचनारनकौ आम-

नकौ आरसौ अनारन अँगारसौ ॥८२॥

दोहा ।

पाणि पाय कपिराजकौ, तीरथराज अनूप ॥ जनु अशोक तरु सेवकन लही मुक्ति सारूप ॥ ८३ ॥

कवित्व ।

तोर तरु लतन मरोर जरवेलिनकी विटप नवेलिनकी डारत क्षई करैं ॥ कालीकवि सजर उजार फुलवारिनकों मार रखवारिनकों कलह मई करैं ॥ रक्ष पति रावण सों रक्षक पुकारे जाय चाहत कहा धौं अव अगति दई करैं ॥ आजलौं न ऐसी भई लंकपुर वासिन पर यह कपि जात नाथ निपट नई करैं॥ ८४ ॥

दोहा।

दशकंधरकी नगरतैं, वाहिर अधिक अधीर॥ कढ़ी सैन्य सुतसंगहीं, मेघ गिरा गंभीर॥ ८५॥

कवित्व।

घूमत घटासे घनराजके किरीटनपै
छीटन छबीले करि छावले उछालैंहै॥
कालीकवि दिग्गज मतंग मतवारिनके
भालन पै परहिं तुरंगखुर तालैं हैं॥
रथकी रमाकैं परछालतीं रमाके कान
मेघनमै सालतीं पताकनकीं नालैंहैं॥
फूटी परैं फुनगें फणीश फणमंडलकी टूटी परैं नभतैं सितारनकी मालैंहैं॥ ८६॥

दोहा ।

रथ रनकत फहरात ध्वज, बजत दुंदुभी धीर ॥ हय हींसत चिग्घरत गज करत कुलाहल वीर ॥ ८७ ॥ लख विपक्ष मुख रक्षपति, अक्षयकौ रुखपाय ॥ हाँके गजिन गयंद तब, ध्रुवके धका बचाय ॥ ८८ ॥ कट कटाय रिपुकटकपर, परो डपट झट झप ॥ आय गयो निशिचरनको, काल मनौ कपिरूप ॥ ८९ ॥

कवित्व ।

गिरिनकरंडकर रंडकर राकसीन वदन विहंडकर असुर अनंतके ॥ काली कवि तुंड विन वाहन वितंडकर छंडकर

झंड मंडलीकनके पंतके ॥ चंड कर चुंगल चपेट खल मुंडनको खंडकर गंडन गयंद गलदंतके ॥ मंडकर मंडित उमंड रण मंडलमै उदित उदंड भुजदंड हनुमंतके ॥ ९० ॥

दोहा।

रही सोइ रणसेज पर, विकल करी कपिनाह ॥ सैन प्रिया जनु अच्छकी गीधपच्छकी छाँह ॥ ९१ ॥ मार विटप कपि असुरको, आदि वरणके संग ॥ कियौ मनोरथ भंग नाहिं ॥ कियो मनोरथ भंग ॥ ९२ ॥

सवैया।

रावणकी हहरान सुने भहरान लगीं

पुरकी क्षिति छातैं ॥ काली सुरी असुरीं नहूं की भई एकही नैन दशावर सातैं ॥ सांझ सरोजसे रानिनके मुरझाय गये मुखरा दुखरातैं ॥ आँशुनकी मनौं अक्ष-मरैं दई अक्षन अंजली नामके नाते १३॥

दोहा ।

लेत नगर नारीनके, नैन नीरको स्वाद॥रथ निकरो घननादकौ, मूक मेख लावाद ॥ १४ ॥

सवैया ।

गीरगँभीर महारणधीर सुवीर धुरी-ननको शिरताजसो ॥ त्यौं कविकाली झुरावत आवत बाज दबावत टूटत बाज सो ॥ लै तरुराज तराजमहा धुन गाज

विराजत जोम जहासो ॥ मेघगराजनके
रथपै कपिराज दराज परो गिरि गाज-
सो ॥ ९५ ॥

दोहा।

भयौ विरथ आयुध रहित, महारथी
बलवान ॥ फुल्ल वाहु लाग्यौ करन, मल्ल
युद्ध संधान ॥ ९६ ॥

कवित्व।

बैठकर वायें तर बगलतरेहो पैठ कम-
र समेट करबल भरपूरमें ॥ कालीकवि
गोट पर पकर लँगोट पट पींडकर मीड-
त मिलाये देत धूरमें ॥ घूमकर चक्करकी
निकर तरे तैं वीर भूमि पर चाहत पछा-
रो कपिशूरमें ॥ झूमकर झपक झपेटत

भुजान बीच लूम कर लपक लपेटत लँगूरमें ॥ १७ ॥

दोहा ।

मारो वारिदनादने, कपिहि कियो परतंत्र ॥ ब्रह्म अस्त्र वगला मुखी, रिपु भुज तंभन मंत्र ॥ १८ ॥

कवित्व ।

बाँध बजरंगको अकेले रंगभूमहीं ते संगमें सकेलैं सैन धारा लिये जातहै ॥ कालीकवि कुमति पिताको लोक लोकन में ठोकवेकौं अयश नगारा लिये जातहै ॥ फूले पाप फूलन पलाशतरु फारिवेकौं पवनकुमारहै न आरालिये जातहै ॥ हाहाकार पारवेको वगर उजार

वेकौं जारवेकौं नगर अँगारा लिये जातहै ॥ ९९ ॥

दोहा ।

प्रतिबिंबितमणि भवन महँ, प्रतिखं-भनके देश ॥ हनुमत अति श्रमकीन्ह तब, चीन्ह परो लंकेश ॥ १०० ॥

कवित्व ।

अटल अटूट लूट लूट धन लोकनको खलन लगाई नील रतन कगारहै ॥ कालीकवि मार बेसुमार सुर वंदिनके विरह दमारके धुवाँको धुंधकारहै ॥ जीत कर सकल समाज शशि सूरजको कैधौंराज पदपै विराजो अंधकारहै॥विज्जुल लता-से खुल उज्ज्वल रहेहैं दंत सज्जल पयो-धरके कज्जल पहारहै ॥ १०१ ॥

दोहा ।

आगीसी दागी हगन, को तू कहत नमोहिं ॥ अरे अभागी हुमनकी, दया न लागी तोहिं ॥ १०२ ॥

कवित्व ।

लंकपुर जारन उजारन अशोकवन मारनहौं असुर कुमारनकी भीरको ॥ काली कवि निपट निवारन सियाको शोक पार परतारनहौं जलनिधि नीरको ॥ द्रोण गिरिधारन उधारन अहीशप्राण बालवध कारन हौं तनय समीरको ॥ दशन उचारणहौं चोर निशिचारणको चारणहौं चतुर चुनिन्द रघुवीरको ॥ १०३ ॥

दोहा ।

सूने हरलायो अधम, त्यो तूं रघुवर-
रबाल ॥ श्वान जान आमिषहरी, ज्यों
प्रसूनकी माल ॥ १०४ ॥

कवित्व ।

चारदश विद्या दशमुखमैं न मातीं
निज बोध मदमातीं एक एकैं रहीगूँदहै-
कालीकविराज अनुशाशन तुम्हारी
आज पूरीपाक शासन गरेकीगरफूंदहै॥
लोकपन सहित त्रिलोक जीतवेकी कल
करित अकाशके अटापै गई कूँदहै ॥ अ-
नाचार सुनहै तुम्हारो चार आननतवकै-
से चार हाथन विचारौ कान मूँदहै १०५॥

दोहा ।

बालीपर तारा गया, पर ताराके गेह ॥ परदारारखतहै कहूँ, परदारा को नेह ॥ १०६ ॥ धरहु वेग धावहु सुभट, दाबहु सकहि न जाय ॥ मृगशावककी पूँछ में पावक देहु लगाय ॥ १०७ ॥

कवित्व ।

पुच्छ पुर फेरत लेथरत पताकनकौं गेर कटसेलियां नवेलियां नगिनकीं ॥ कालीकवि नारिनकी नगर गुहारैं परी जहर फुहारैं फूतकारैं पन्नगिनकीं ॥ वेग बढ़ लागी कोट कंचनकँगूरन सों जागीं जोत जोरन करोर कन गिनकी ॥ फोर नभमंडल अखंडल

अटापै जाय दपटैं दराज लूह लपटैं अगिनकी॥१०८॥ फार कर वसन विदारत नतुंगनको मारकर डारे मनहारनके तार तार॥कालीकवि वितर बिथार वर वारन के मुक्ता हज़ारनके जारन दये उजार॥ मार मद गलित कुमार सुकुमारिनकी पवनकुमारने लगाई वेसुमार मार॥भागीं पुरनारियाँ अँगरिया न देती पाँउ गारियाँ न देती चिनगारियां न देती झार १०९सोनेकी झूमरैं न सूझैं कौन कौनै गिरीं बूझैं कहूँ पावतीं न गूंजैं दीह दुरकीं॥ कालीकवि झूलन कहै कौ शीशफूलन की अलकैं धुरीलीं बाहु मूलनपै लरकीं॥मोरैंसी कुहारतीं धुँआकी धूम

धूंधुर में धारैं अंशुवानकीं निवारैं झार झुरकीं ॥ राई हरदवारैं जेन आई घर दुवारैं ते फिरैं परदुवारैं परदुवारैं लंकपुरकीं ॥ ११० ॥
सागरको पंक है न अंक है कुरंगहूकौ नाहिनै कलंक बंकहूकीं मलिनाईहै ॥ कालीकवि जाहिर कपिंद इंदु आनन पर तेरी पुच्छ जारनकीं झारनकीं झांईहैं॥ मोतिनके हार सीं हजारन दिखातीं तौन तारनकीं अवलीं अकाश मैन छाईहैं ॥ लंक तिलगैयां देख किरन जरैंयां देख सैयाँ देख रैनकीं तरैयां भर आई हैं १११

दोहा ।

निशिचर सकल ससंककर, या विधि

लंक जराय ॥ अति अशंक जलसिंधु में, कूदपरो कपिराय ॥ ११२ ॥

कवित्व।

वारिधि में बोरकै हिलोरकै बुझाई पूँछ सीरे जल खोरकै वितायो श्रम शूलहै ॥ आयो पास जानकीके पायो चारु चूड़ामणि धायो वेग रामको दिखायो सुखमूलहै ॥ कालीकवि राघव निहार कह्यौ वार वार वेणी नागिनीको जो मणीके समतूलहै ॥ फुरत फुलिंगसो सनेहके दियाको प्राण पालन पियाको कासियाको शीशफूलहै ॥ ११३ ॥

दोहा।

विहँसत अनमोले वचन, बोले

राम उदार ॥ समाचार अरि नगरके, वर्णहु पवनकुमार ॥ ११४ ॥

हनुमान्-कवित्व ।

कोट कोट कोटनके कनक कँगूरन-पै कल कलधौतनके कलश रसाला हैं ॥ कालीकवि तुंग दर महल वलंदन पै पवन तरंगित पताकनकी मालाहैं ॥ पुंजपारिजातनके जात न गिनाये जहाँ अगर सुगंधनके मचत मचालाहैं ॥ चौक चाँदनी है चाक चंद्रक चुनी है चारु चन्द्रवदनी हैं चन्द्रिकाहैं चन्द्रशालाहैं ॥ ११५ ॥

दोहा ।

फूले जहँ पारिजातके, कमल चहूँ

दिशि घेर ॥घेर रहे जनु नगरको, नारिन के मुखवैर ॥ ११६ ॥

कवित्व ।

टूटेहार तारनतैं मुक्ताकतारनतैं मग विस्तारनतैं नग झुमकानके॥कालीक-वि रचित सुरंग पगराननतैं वलय विभा-गनतैं विगलितपानके ॥ गति झुक झा-रनतैं तिलक लिलारनतैं स्वरन सितारन तैं पदरमितानके ॥ उठत प्रभात लख रातके निशानै जहँ गमन दिमानै जात जानै वनितानके ॥ ११७ ॥

दोहा ।

चुंबन आलिंगन सुरत, युवा युवा प्र-णठान ॥ हार जीत फल एकपै, चाहत जीत सुजान ॥ ११८॥

कवित्व ।

सुमन सुगंध विन पवन न देखौ जहाँ भवन न देखौ जहाँ विन घनबागकौ ॥ कालीकवि तालविन मुरज न देखौ जहां उरज न देखौ जहाँ विननखदागकौ॥ सूनो पीक लीकनते पलक न देखौ जहां अलक न देखौ विन तिलक सुहाग को ॥ चन्द्रतैं न देखौ छबि छीन जनकोऊ जहाँ इन्द्रतैं न देखौ कमकरम अभागको ॥ ११९ ॥

दोहा ।

होत न मंदिर मणिनके, परम प्रकाशनरात ॥ केवल दिनकर किरण जहँ, कमल पुलावन जात ॥ १२० ॥

कवित्त ।

प्रिय परिरंभन ते ललक न और कछु कलक न और कछु परतियमानतैं ॥ कालीकवि उमर न और तरुणापनतैं तपन जहाँ है और मनमथ वानतैं ॥ सुभग शरीरनतैं सरल न और कछू कुटिल न और कछू भ्रुकुटी कमानतैं ॥ केलि रसकौतुकतैं कदर न और कछू मधुर न और कछू अधर सुधानतैं ॥ १२१ ॥

दोहा ।

परत चाँदनी रैनिमें, चंदनके जल-ढार ॥ वंदीसुर विरहीनपर, कुसुमक-सोटनमार ॥ १२२ ॥ रुद्ररूप निज भक्त-को, वरणौ बहुत प्रताप ॥ कहो न सीता

विरहको, समाचार कछु आप ॥१२३॥

कवित्त ।

सीताके उपासनकी बूझत कथा हौ-
तौ बूझौ कहौ केतीं हरतालिका सुनाऊँ
मैं ॥ कालीकविलाऊं ढूंढ़ द्वैज द्विजराई
कला देहदुबराई आज रावरे दिखाऊँमैं॥
ताके अंग अंगनकी रंगत बताइवेको
समय असंगत वसंत कहँ पाऊंमैं॥अधि-
क अधीरनकी नैननके नीरनकी मघा
मेघ वरसैं तौ सुरत कराऊँमैं ॥ १२४ ॥

दोहा ।

पुरी सिया विरहागकी, आये जरी
जराय ॥ असुर नैन शरके मरे, रघुपति
मारहु जाय ॥ १२५ ॥

दोहा ।

राम लषण सुग्रीव पुनि, ऋच्छप अंगद खास ॥ लगे करन निज मुखन ते, हनुमत सुयश प्रकास ॥ १२६ ॥

राम--कवित्व ।

पाल तर पल्लवके विकल विहाल हाल तलफ रहीती बाल विरह वरीभई ॥ कालीकवि हेतकर देत मुँदरीके वह मिलन तुम्हारी वाहि अमृत झरी भई ॥ साँचहु तुम्हारी सौंह केवल तुम्हारे शील पाई सुग्रीवहूने संपति हरीभई ॥ राजभौ विभीषणको दरश तुम्हारे पाय परश तुम्हारे पाँय मगरी परीभई ॥ १२७ ॥

लक्ष्मण--कवित्व ।

बुद्धि बलसागरके विशद सुधाको सार सद उपकार सुगरीवसुखदेनको ॥ काली-कवि द्रोणगिरि धारण अपार भार वर अवतार चारु मर्दनमैनको ॥ व्योममग धावनहै पावन पवनपूत भवन उपार धार लावन सुखेनको ॥ कारवरदार दर दार रघुनायकको अवसर दार सरदार-कपि सेनको ॥ १२८ ॥

सुग्रीव--कवित्व ।

विश्व संपदाहैं कै हदाहैं सिंधु संगर कीं गरुई गदाहैं वैर वधन विधान कीं ॥ कालीकवि दीननकी देन अ-भिलाषा जे कि शाखाहैं सुहाई देव-

तरु सुखदानकी॥ रतन किलाकी ऊन उन्नत इलाहै कै शिखर शिलाहैं मेरु मंदर महानकी ॥ वज्रबंधुजाहै शूरसैन सिंधुजाहैं राम यशकी धुजाहैं कै भुजाहैं हनुमानकी॥ १२९ ॥

जाम्बवंत–कवित्त।

भमर भुलानो कंज पुंज कुम्हलानो देख दुहिन दिमानो अंजीन मंजु मैलैना॥ कालीकवि भानौ दीह दंतनदवानौ वज्र बल विचलानो नेक अधर उचेलैना ॥ मेरे देखतैंही दियो देविन उन्हानो बलि देखियो सुमेरै कहूँ हाथन हुतेलैना ॥ अंजनी सलोनाहै तुम्हारो वीर छौनौ

अबरोकौजाहि कौनौ जो अन्हौनौ खेल खेलैना ॥ १३० ॥

अंगद-कवित्व ।

करनअमंद रामचंद अरिविंद पद रज मकरंदको मलिंद अवधूतहै ॥ काली कवि वंदनीय राजत अमंदवृंद वंदर बलंदको पुलंद पुरुहूतहै ॥ बलजलसिंधु वालिबंधु रणसिंधुरको धरणिधुरंधरको धन मजबूतहै ॥ वीरनकोवीर मीर अमर अमीरनको विपत विदीरन समीरनसपूतहै ॥ १३१ ॥ स्वर्गपुरजीनाहै कुरीना राज संपत को भूषण नवीना भारतीके कंठसतको ॥

कालीकवि काव्यरस रंगत रंगीना वाक मीनापै नगीना यह कवि करतूत को॥ मोदकर करणसुधा है हरि भक्तन को बोधकर पंडित समूह पुरहूतको॥ पुंजकविताको जाहि मंजुकविताको कुंज कलपलताको जो पताको पौनपूतको॥ १३२॥

दोहा।

उनइससै उनचासमें, सुकविनको सुखपंथ॥ प्रगट भयो हनुमंतको, सुयशपताका ग्रंथ॥ १३३॥ पंडित परकीरति विमुख, धन मद विकल नरेश॥ मोकविता रसको रसिक धन्य पुरुष किहि देश॥ १३४॥ जे मारे कुकवीनके, ते म्हारे वश

नाहिं ॥ हुचकारे कारे हिरण, क्यों पुचकारे जाहिं ॥ १३५ ॥

श्रीमत्कालीदत्तकविनागर कृता हनुमत्पताकेयं पूर्णा.

अथ शंकावली ।

प्रश्न-लंका राक्षसनकी नगरी सुंदरता वर्णन करी सो कैसे बने ?

उत्तर-लंकामें प्रायः देव नाग कन्या बली राक्षसनकी हरीं निवास करती हतीं और राक्षस भी युद्धही में भयानक भेष धारण करतेरहे संभोगार्थ सदैव सुंदररूप तथा राक्षसी भी ।

प्रश्न-शरदऋतुमें रामयात्रा लंकामें वसंत वर्णन किया सो कैसे बने ?

उत्तर–लंका शास्त्रसे मध्य रेखाहै ताते सदैव वसंतऋतु रहतहै।

प्रश्न–लंकपुर जारन इत्यादि हनुमान्ने प्रथम कहो सो कैसे ?

उत्तर–रावणको कलपांतर चरित्रोंकी सुरत कराई।

प्रश्न–त्रिजटाको स्वप्न न कहौ सो का हेतु ?

उत्तर–बहु संमत नहीं।

इति

पुस्तकमिलनेका ठिकाना.

खेमराज श्रीकृष्णदास.

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना–मुम्बई.

जाहिरात।

बालसंस्कृतबोधिनी।

यह पुस्तक, जिन्होंनें संस्कृत कुछभी पढानहीं, उन्होंकूं भी संस्कृत भाषाकी परिचय और बोलनेंका सामर्थ्य अनायाससें देताहै नवीन संस्कृत सीखनेंवालोंको बहोत ही उपयोगीहै की॰ ५ आना.

रामरसायण-रामायण।

रसिक बिहारीकृत छपताहै. यह स्मृति पुराणेतिहासोंके प्रमाण सहित ललित मनोहर छंदवृत्तोंसें अलंकृत श्रीरामचंद्र जीके चरित्रका परमोत्तम ग्रंथहै.

मांझ पच्चसी और मांझ बतीसी की॰ १ आणा. बालशिक्षाप्रकाश की॰ १॥ आणा. भाद्रपद माहात्म्य की॰ ८ आणा. गरुडपुराण भाषाटीका की॰ १ रु॰ नासिकेत भाषाटीका की॰ ८ आणा. पौषमाहात्म्य की॰ ८ आणा.

शकुनवसंतराज

संस्कृतटीका और भाषाटीका सहित जिसमें अनेक प्रकारके शकुनोंका विचार अतिउत्तम प्रकारसे कियागया है कीमत ३ रु॰

ललितफाग-व्रजकीहोरी-मुंबईका छपा. की॰ २ आना.

चिकित्साचक्रवर्त्ती-वैद्यककाभाषा. की॰ १ रुपाया है.

पंचपक्षीभाषाटीकासह-प्रश्नकाग्रंथ. की॰ ३ आना है.

श्रीमद्भागवत श्रीधरी टीका समेत ॥

यह पुस्तक अनेकानेक देशोंके प्राचीन पुस्तक मिलाकर अत्यंत शुद्धकर सर्वत्र टिप्पणी शोध देकर अतिउत्तम कागदोंपर उत्तम अक्षरोंमें छापा है. यह प्रथमावृत्ति छपाहै. ऐसा शुद्ध और सुंदरर पुस्तक अन्यत्र दुर्लभ है की० १२ रु०

श्रीसप्तशतीचंडी अर्थात् दुर्ग्गा पाठ

संस्कृतमूल और भाषा टीकासहित.

महामाया जगज्जननी आदि शक्तिकी शक्ति जगत् भरमें विख्यात् है इस परम पावन चरित्रकी महिमा अति अगधा हैं इसमें कठिन दार्शनिक तत्वलिखित हैं रक्तबीजका वध, महिषासुरका वध, मधुकैटभका वध, शुम्भ निशुम्भका वध इसमें अत्यन्त विस्तार पूर्वकहै, देवीसूक्त, रात्रीसूक्त, रहस्य, कील, कवच अर्गला और प्रयोगादि विधिभी संयुक्तहै और इनका भाषाभी किया गयाहै भाषा अत्यन्त सरल मधुर तथा तन मन प्रसन्न करनेवाली है यह ग्रंथ अभी नयाछपकर तय्यार हुआ है इसका पाठ प्रत्येक हिन्दूके गृहमें होना परम आवश्यक है महामाया की यह महिमा सुननेसेसम्पूर्ण रोग शोक लयको प्राप्त होतेहैं और सुख सौभाग्यका पार नहीं रहताहै कीमत केवल १ रु० है जिल्द बहुत दृढहै ॥

जाहिरात.

मनुस्मृति ।

पं०केशवप्रसाद प्रोफेसर आगरा कालेज कृत भाषाटीकासहित इस उत्तम ग्रंथका सान्वय भाषा अत्युत्तम हुआहै यह पुस्तक हिन्दू मात्रको परमोपयोगीहै, राजा महाराजाभी इसके अनुसार-धर्म्म पूर्वक शासन करते हैं यह ग्रंथ देखनेहीके योग्यहै भाषाअत्यन्त सुगम और रसीली है कीमत २॥ रु० रफका २ रु०

वाल्मीकीरामायण संस्कृत मूल और भाषा टीका सातोंकाण्ड छपके तय्यार कि० २२ रु०

वाल्मीकीयरामायण केवल भाषा अत्युत्तम जिसमे श्लोकांकभी हैं. कि० १० रु०

रंभाशुकसंवाद छपके तय्यार है

नाम प्रताप छपके तय्यार है

मदनमुक चपेटिका छपकेतय्यार है.

शृंगारांकुर छपके तय्यार है

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापखाना मुम्बई.